३७/१(२०१)

इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ धुळें.

—: हस्त लिखित ग्रंथ संग्रह :—

ग्रंथ क्रमांक ३७+१ (२०१)

ग्रंथ नाम अमरकोशाची मराठी टीका.

विषय मराठी- कोश.

" Joint project of Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

॥अथअमरकोशप्राकृतटीकाग्रंथप्रारंभः॥ श्री॥ रा॥मः॥

" Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

श्रीगणेशायनमः॥श्रीसत्येश्वरायनमः॥स्त्रीपुंक्लीबविशेषधर्मरहितश्रीसार्धनारीश्वरंनत्वाभक्तविभूषणंत्रिभुवनोत्पत्यादिहेतुंवि
भ्रुं॥टीकांलक्ष्मणकोविदः प्रकुरुते वाण्यामहाराष्ट्रयाकांतांबालविबोधनार्थममरस्याशोधनीयाबुधैः॥१॥श्लोक॥ यस्यज्ञान
दयासिंधोरगाधस्यानधागुणाः॥सेव्यतामक्षयोधीराःसश्रिये चामृतायच॥१॥यस्येति।ज्ञानदयासिंधोः।ज्ञानाचाआणण्या
चा।दयेचा।रूपेचा।सिंधुः।समुद्रऐसा।वेदांदिकांस।अगम्य।यास्तव।अगाधस्य।गंभीरऐसा।यस्य।ज्यापरमेश्वराचें।
अनघाः।अनिंद्यऐसे।निष्पापह्मणावयाचाप्रकार।गुणाः।गुण।अक्षयः।नाशरहितऐसा।सः।तोपरमेश्वर।भोधीराः।बुध्दिवं
तहो।भवद्भिरित्यध्याहार्यं।तुह्मी।श्रीयेच।लक्ष्मीकारणें।अमृतायच।मोक्षाकारणें।सेव्यतां।भजावा।नामरूपेंकल्पितत्वा
स्तव।यारीतीं।इष्टदेवतास्तवकेला।असेंपरांस।हितोपदेशकर्ता।स्वहितइछणारऐसा।ग्रंथकर्ता।आशिर्लक्षण।लक्ष्मीस्मर
णलक्षणमंगळआचरनाझाला।मंगलानांचमितिमंगळवचनाधारेंसर्वमंगलस्वरूपजगत्कारणस्मरूनग्रंथारंभिलाजे।प्र

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

(3)

॥अ॰को॰टी॰ थमममगण आहेयेणें लक्ष्मीप्रदहीहोय। मोभूमिस्त्रिगुरुः श्रियंदिशतीतिवचनात्॥१॥ श्लोक॥ समाहृत्यान्यतंत्राणि संक्षिप्तैः प्रति ॥को॰१॥
॥१॥ संस्कृतैः॥ संपूर्णमुच्यते वर्गैर्नामलिंगानुशासनं॥२॥ टीका॥ मंगलाचरणपूर्व श्लोकें करून। याश्लोकें। अभिधान। प्रयोजन।
सूचविजेतें। समाहृत्येति। अन्यतंत्राणि। अन्येषां। दुसर्यांचींतंत्रें। म्हणिजे। व्याडिविश्वमेदिनीकोशादिकातें। अथवा। नामलिंगानु
शासनासिद्धांतातें। समाहृत्य। एकत्रकरून। अथवा। संग्रहून। संक्षिप्तैः। स्वल्पशब्दात्मकऐसें। अथवा। सारांशसहितऐसें। प्र
तिसंस्कृतैः। प्रत्येकक्रमकथनेंकृतोत्कर्षऐसें। अथवा। शब्दरचनाविशेषवंतऐसे। वर्गैः। प्रकरणें जीतिहीं। संपूर्णं। न्यून। दोषर
हित। जैसें होय तैसें। नामलिंगानुशासनं। नामें अभिधानें। लिंगें स्त्रीपुन्नपुंसकें। ही अनुशिष्यंते। विविच्य। बोधिजेत। आहेतू। जा
ठायीं नामलिंगानुशासन। उच्यते। बोलिजेतें॥२॥ श्लोक॥ प्रायशोरूपभेदेनसाहचर्याच्चकुत्रचित्। स्त्रीपुंनपुंसकंज्ञेयंतद्विशेष
विधेःक्वचित्॥३॥ अथलिंगज्ञानोपायसांगिजतो। प्रायश इति॥ प्रायशः। बहुतकरून। रूपभेदेन। स्वरूपभेदकरून। म्हणजे। आ ॥१॥
पूविसर्गबिंदुयेहीकरून युक्ता। तें। स्त्रीपुन्नपुंसकं। स्त्रीपुन्नपुंसकं। ज्ञेयं। जाणावें। तेकसेंतर। पश्चा। रमाहें। आ वंतत्वें स्त्रीलिंग। =

" Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai. "

3A

पिनाको। जगबंधनुः। हे विसर्गात्त्वें पुल्लिंग। पंकेरुहं। तामरसं। बिंदान्तत्वें नपुंसक। यारीतीरूपभेदें जाणावें। क्वचित्। कोणे=
एकेस्थ किं। विशेषण पदें करून सर्व नामपदें करून। तीनी लिंगें जाणावीं। तें कसें तर। तसरो हनुः। तसरः। या पुल्लिंग विशेषणे
हनुशब्द। पुल्लिंगत्वें जाणावें। सेवाल्या कुतुपः पुमान्। सा। एव। येणें करून मागील कुतूः। हे स्त्रीलिंग जाणावे। साहचर्यात्। रू
प भेदाभावीं कोठें एक्यास्थलिं। सहवासयोगास्तव स्त्री पुन्नपुंसकीं जाणावीं। तीं कसीं तर। आश्वयुगश्वीनी। आश्विनीसा
हचर्यास्तव। अश्वयुक्। स्त्रीलिंग जाणावें। प्रचेतां वरुणः। वरुणसहवासास्तव प्रचेता। हे पुंलिंग जाणावें। वियद्विष्णुपदं। वि
ष्णुपदसाहचर्यें। वियच्छब्द नपुंसक। जाणावा। क्वचित्स्थळिं। त। द्वनाष। विधेः। त्या। स्त्रीपुन्नपुंसकलिंगाचा॥ विशेषविधि ह्मणविजे। असु
क लिंग ह्मणून निर्देश केल्यास्तव। तें तें लिंग जाणावें। तें कसें तर। भेरी स्त्री दुंदुभिः पुमान्। शोचिः शोचिरुभे क्लिबे। या प्रकारें
त्या त्या लिंगीं। तो तो शब्द। जाणावा। ह्मणावयाचा प्रकार॥३॥ अथ श्लोक दुयें ग्रंथपरिभाषा सांगिजेते॥ मू०। श्लोक॥ भेदाख्या

(५)

॥अ०को०॥ नायनद्वंद्वोनैकशेषोनसंकरः॥ कृतोत्रभिन्नलिंगानामनुक्तानांक्रमादृते॥४॥ टीका। भेदाख्यानायेति। अत्र या अमराख्यको ॥को०॥
॥२॥ शाठाई। अनुक्तानां। स्वपर्यायीठायीं। अपठितऐसी। नेकसेतर। अप्येकदंत। हेरंब। लंबोदर। हेशब्द। कोणत्याहीलिंगींनिर्दिष्टन ॥३॥
व्हेत। याप्रकारें। आपल्यापर्यायीं। अपठितम्हणावयाच्याप्रकार। ऐंसीभिन्नलिंगानां। स्त्रीपुन्नपुंसकात्मकवेगळालींलिंगेंजीत्यांउ
चा। भेदाख्यानाया परस्परभेदसांगावयाकारणें। द्वंद्वः। द्वंद्वसमास। नकृतः। नाहीकरिजेला। नेकसेतर। देवतादेवतामराः। अ
सेंसमस्तपदनकेलें। कांतर। द्वंद्वांती। परवल्लिंगता। यास्तव। अमर। यात्रोवटील। पुलिंगत्वांद्वंद्वदेवतांदेवत। दींदोनीभिन्नलिंगें। पु
ल्लिंगतापावतीलम्हणून। असाच। एकशेषः। एकशेषसे ना। नकृतः। नकेला। तकसेतर। खंनभः। श्रावणोनभाः॥ यास्थकिं
खश्रावणौतु। नभसौ। असी। संहितानकेली। कांतर। एकशेषाठायीं। उरलीं। लिंगता होत्ये। म्हणून। तेकसेतर। खंनपुंसक। ॥२॥
श्रावणपुंल्लिंग। यादोंठायिंही। नभसौ। असेकेलेस। उरलेंसेवटील। लिंगहोतें। तेव्हां। खं। याशब्दाठायीं। नभसशब्दपुल्लिंग

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

(9A)

किं। नपुंसक। बोध होणार नाहीं। ह्मणोन। खं। नभः। श्रावणे नभाः। असें। नानार्थवर्गीं सांगिजेलें। यास्तव। समानलिंगाचाच द्वं
द्व केला आहे। अप्येकदंतहेरंबलंबोदरगजाननाः। पादाः रश्म्यंघ्रितुर्यांशाः इत्यादि। स्थानांतरिं। पठितभिन्नलिंगाचे द्वंद्व समास
करिजेलेच आहेत। यथा। अप्सरोयक्षरक्षोगंधर्वकिंनराः। मातापितरौ पितरौ। हे शब्द। आपआपल्या पर्यायीं सांगिजेले आ
हेतच। एक पर्याय शब्द नव्हेत। ह्मणून मिश्रलिंग द्वंद्व क्रमकथनास्तव केले। परंतु क्रमाहते। क्रमाविना संकर न करिजेला। स्त्री
पुन्नपुंसके क्रमें सांगिजेलीं। हीं क्रमें करून सांगीतलीं असतां अंतरीय संकर दोषास्पद होत नाही। ह्मणाव याचा व याचा भा
व। संकर ह्मणजे भिन्नलिंगात्मक शब्दाची मिश्रिता। तें कसें तर। स्तवः। हे पुंल्लिंग सागून। स्तोत्रं। हे नपुंसक सागून। स्तुतिर्नुतिः।
ही दोनी स्त्रीलिंग कथिजेली। नहून। स्तुतिः स्तोत्रं स्तवो नुतिः। असा पाठ न केला। असेंच। जनुर्जननजन्मानी ति। नपुंसकानं
तर जनिरुत्पत्तिः। स्त्रीलिंग सांगून उद्भवः। हे पुल्लिंग सागीतले। याव्यतिरिक्त कोठी। वभ्रागौः पृथ्वी पुरस्मा भ्रद्दनौषधिस्त्रः

॥अ०को० गादिभिरित्यादिकीभिन्नलिंगद्वंद्वाविना अन्यत्र भिन्नलिंगद्वंद्व एकशेष संकर केल्या नाही असा। अर्थ करितात। त्यांस असमंजस। अ ॥कां०
॥३॥ र्थास्तव निषेध प्राप्त होतो। यास्तव तदर्थ अद्वेरिला॥४॥ त्रिलिंग्यां त्रिष्विति पदं मिथुने तु द्वयोरिति॥ निषिद्धलिंगं शेषार्थं त्वंताथा ॥१॥
दि न पूर्वभाक्॥५॥ त्रिलिंग्यामिति। तीनी लिंगांचे सामाहार द्वंद्व। त्रिलिंगी पद होतें। त्याठायीं त्रिषु। म्हणून पद योजिलें आहे। त्रिषु
स्फुलिंगोग्निकणः। येणेकरून अग्निकण तीनी लिंगीं जाणावा। मिथुनें। स्त्रीपुं। या दोनी लिंगी उक्त शब्दाठाईं। द्वयोः। इति पदं। द्वयोः
म्हणून पदप्रयोग केला आहे। द्वयोर्ज्वालकीलौ। ज्वालशब्द। कीलशब्द। दोनी लिंगीं जाणावें। स्त्रीपुंल्लिंगीच। म्हणावयाचा प्रकार
नहून। तीनीतील भलतींच दोन लिंगे कल्पून येत। स्त्रीनपुंसक। अथवा पुंनपुंसक। असीं दोन लिंगी द्वयोः। येणे म्हणतां येत नाः
ही। स्त्रीपुंनपुंसकं ज्ञेयं। यास बाध येतो। यास्तव। स्त्रीपुंलिंगीच जाणावें। निषिद्धलिंगं। निषेधिजेलें आहे। लिंग। तीनीतील ॥३॥
एकादें लिंग ज्या पदाचें। तें निषिद्धलिंग। तें शेषार्थ। उरल्या लिंगीं जाणावयाकारणें जाणावें। यथा वज्रमस्त्रियां। स्त्रीलिंग

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

5A

निषेधें।उरल्या दोनी लिंगीं। वज्रशब्द जाणावा। याप्रकारेंच। द्विहीनं प्रसवे सर्वं। द्विहीनें ङ। इय हीने कंकु दरे। इत्यादि जाणावें। असेंच
त्वंताथादि। तु। पद अंतीं ज्या पदास। तें। त्वंतं अ थ पद। आदि प्रथम। ज्या पदास। तें अथादि। त्वंतास। यथादीस। इतरेतर द्वंद्व करा
वा। हे पदद्वय। पूर्व भाक्। पूर्वपदातें भजणारें ऐसें। न होतें नाहीं। येणें करून। नामपद। लिंगपद। सर्वनाम पद। अव्ययपद
पूर्वान्वयीं होत नाहीं। पुढील पदासयोजावें। म्हणावयाचा प्रकार। तें कसें तर। इंद्राणी नगरी त्वमरावती॥ नगरी पदास।
तु। अंतीं आहे। म्हणून। इंद्राणी पूर्वपदास। न भजतां। अमरावती पर्याय जाहाला। जसें थ। शीघ्रं त्वरितं। शीघ्र पदास। अथ आ
दि म्हणून। जव पद पर्याय। न होतां त्वरित पर्याय जाहला॥ लिंगपद कसें तर। व्यवधा पुंसि त्वंतर्धिः। पुंसि पदांती। तु। आहे म्ह
णून। व्यवधा पद। पुल्लिंगी। न होतां। अंतर्धिः। पदाकडे लागलें। शस्तं चाथ त्रिषु द्रव्य इति। अथादि म्हणून। त्रिषु। शस्त। न हो=
तां द्रव्यपद। तीनी लिंगीं हा जालें। सर्वनाम पद कसें तर। न स्य तु प्रिया इत्यादि। विष्णुपदं वा तु पुंस्या काश विहायसी=

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

॥अ०को० ति। अव्ययपदं। वा। हें अव्ययपद विकल्पासकयाचें पुढें। तुआहे। म्हणून। विष्णुपद। पद। कोडे। विकल्पपुंलिंग त्वन होतो। पुढी ॥कौं॥
॥४॥ ल। आकाश विहायसी हो नीजा हलीं। अथ शब्द। अथो शब्दास। उपलक्षण होय। यथा। अनुक्रोशोप्यथो हसः। उदपानं ॥१॥
तुंपुंसिं वा। यथे दोषेनोः पुढील नामाचा। अभावास बा। पादपूरणार्थ। चकारादिपाठ ॥५॥ श्लोक ॥ स्वरव्ययं स्वर्गनाकः
त्रिदिवत्रिदशालयाः॥ सुरलोको द्योदिवौ द्वे स्त्रियां क्लीबे त्रिविष्टपं ॥६॥ टीका। स्वर। असें। रेफांत अव्यय। स्वः। असा
शब्द। स्वर्गः। नाकः। त्रिदिवः। त्रिदशालयः। स्वर्गापासून। आलयपर्यंत। समस्तपदें। द्वंद्वसमासें। बहुवचन केलें आहे। असें
च सर्वत्र जाणावें। सुरलोकः। ही ५ पुंल्लिंग। द्योशब्द ओकारांत। द्यौः। असें रूप। दिव् हे वकारांत। द्वे ही २। ही स्त्रियां। स्त्रीलिं
गी वर्तता हेत। त्रिविष्टपं। हे। ६ क्लीबें। नपुंसकीं। ही ९। स्वर्गाचीनावें। अवराहः। फक्लोदयः। मंदरः। सैरिभः। ही ४ पुंल्लिंग ॥४॥
दिवं। नभः। ही २ नपुंसके। ही द्विग्रंथांतरी उक्त ॥६॥ मूळ॥ श्लोक॥ अमरानिर्जरादेवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः॥ सुपर्=

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(६७)

वर्णाःसुमनसस्त्रिदिवेशा दिवौकसः॥७॥आदितेयादिविषदोलेखाअदितिनंदनाः॥आदित्याऋभवोऽस्वप्नाअमर्त्याअंमृतांधसः

॥८॥बर्हिर्मुखाःक्रतुभुजोगीर्वाणादानवारयः॥वृंदारकादेवतानिपुंसिवादेवतास्त्रियां॥९॥टीका॥अमराः।निर्जराः।देवाः।त्रि

त्रिदशाः।विबुधाः।सुराः।सुपर्वाणः।हेनांत।सुमनसः।हेसांत।त्रिदिवेशाः।दिवौकसः।सांत।आदितेयाः।दिविषदः।दांत।

लेखाः।अदितिनंदनाः।आदित्याः।ऋभवः।उकारांत।अस्वप्नाः।अमर्त्याः।अमृतांधसः।सांत।बर्हिर्मुखाः।क्रतुभुजः।

गीर्वाणाः।दानवारयः।हे।इकारांत।वृंदारकाः।देवतानि।हे नपुंसक।वापुंसि।विकल्पें।पुल्लिंगीं वर्ततें।देवतास्त्रियां।हे।स्त्री

लिंगीं।ही।२६।देवताचीनावे।देवबहुतयास्तवसमस्तनावे।बहुवचनांत केलींआहेत।सर्वदाबहुनांतें।वेचे।नव्हेत।एक

वचनादिभेदीवर्तताता।चसकलः।सौभः।निलिंपः।हींहीं वर्तताहेत॥९॥श्लोक॥आदित्यविश्ववसवस्तुषिताभास्वरानिलाः॥

महाराजिकसाध्याश्चरुद्राश्चगणदेवताः॥१०॥टीका॥आदित्यः।१२।विश्वः।१३।वसुः।८।तीनीनामाचाद्वंद्वकरूनवस

Joint project of Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

।।अ०को०   ।।कां०३।।
।।५।।

वः बहुवचन। तुषिताः।३६। आभास्वराः६४। अनिलैः।४९ येथे हीं द्वंद्वांती बहुवचन। महाराजिकाः२२० साध्याः१२ रुद्राः११ हे ९ गण
देवता। प्रत्येक प्रत्येक गणदेवांची नावें। यास संख्याप्रमाण विषंई संमत ।। श्लोक ।। आदित्या द्वादश प्रोक्ता विश्वेदेवा दश स्मृताः
वसवश्चाष्टसंख्याताः षट्त्रिंशत्तुषिता मताः ।। आभावास्वराश्चतुःषष्टिर्वाताः पंचाशदूनकाः ।। महाराजिकनामानो द्वेशते विंः
शतिस्तथा ।। साध्या द्वादश विख्याता रुद्राश्चैकादश स्मृताः ।।३।। मूळ। श्लोक। विद्याधराप्सरोयक्षरक्षोगंधर्वकिन्नराः।।
पिशाचो गुह्यकः सिद्धो भूतोऽमी देवयोनयः ।।११।। टीका।। विद्याधराः। जीमूतवाहनादि विद्याधर। अप्सरसः। हे सांत। स्त्री बहुव
चन। उर्वश्यादि अप्सरा। यक्षाः। कुबेरादि। रक्षांसि। सांत नपुंसक। रावणादि। गंधर्वाः। हाहादि। किन्नराः। मनुष्यानन
पश्वंगवंत। पिशाचाः। भूतें। गुह्यकाः। मणिभद्रादि गुह्यक। सिद्धाः। विश्ववस्वादि सिद्धपुरुष। भूताः। वेतालादि। अमी। हीं ११   ।।५।।
निराके निराके। जाती। समूहाचीं नांवें। देवयोनींची गणना ।।११।। श्लोक ।। असुरा दैत्यदैतेयदनुजेंद्रारिदानवाः ।। शुक्र=

Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan

7A

शिष्या दितिसुताः पूर्वदेवाः सुरद्विषः ॥१२॥ असुराः। दैत्याः। दैतेयाः। दनुजाः। इंद्रारयः। दानवाः। शुक्रशिष्याः। दितिसुताः। पूर्वदेवाः।
सुरद्विषः। षांत। हीं१०। दैत्यांचीनावें ॥ १२॥ श्लोक सर्वज्ञः सुगतो बुद्धो धर्मराजस्तथागतः। समंतभद्रो भगवान् मारजिल्लोक=
जिज्जिनः ॥१३॥ षडभिज्ञो दशबलोऽद्वयवादी विनायकः ॥ मुनींद्रः श्रीघनः शास्ता मुनिः शाक्यमुनिस्तु यः ॥१४॥ शाशाक्यसिंहः स=
र्वार्थसिद्धः शौद्धोदनिश्च सः ॥ गौतमश्चार्कबंधुश्च मायादेवीसुतश्च सः ॥१५॥ टीका। सर्वज्ञः। सुगतः। बुद्धः। धर्मराजः। त
थागतः। समंतभद्रः। भगवान्। मारजित्। लोकजित्। हीं ३ तां त। जिनः। षडभिज्ञः। दशबलः। अद्वयवादी। नांत। विनायकः। मु=
नींद्रः। श्रीघनः। शास्ता। ऋकारांत। मुनिः। हीं१८॥ बुद्धाचीनावें। शाक्यमुनिः। स शाक्यसिंहः। सर्वार्थसिद्धः। शौद्धोदनिः। गौ
तमः। अर्कबंधुः। मायादेवीसुतः। हीं ७। शाक्यदेशोत्पन्न बुद्धाचीनावें ॥१५॥ श्लोक ॥ ब्रह्मात्मभूः सुरज्येष्ठ परमेष्ठी पितामह
हः ॥ हिरण्यगर्भो लोकेशः स्वयंभूश्चतुराननः ॥१६॥ धाताब्जयोनिर्द्रुहिणो विरंचिः कमलासनः ॥ स्रष्टा प्रजापतिर्वेधा वि

Joint Project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(४)

॥अ०को० धाता विश्वसृड्विधिः॥१७॥टीका॥ब्रह्मा।नांत।आत्मभूः।ऊकारांत।सुरज्येष्ठः।परमेष्ठी।नांत।पितामहः।हिरण्यगर्भः॥लोकेशः।स्वयंभूः।ऊ ॥कां०॥ ॥१॥

॥६॥ कारांत।चतुराननः।धाता।ऋकारांत।अब्जयोनिः।द्रुहिणः।विरंचिः।विरिंचिः।असाहीपाठ आहे।स्रष्टा।ऋकारांत।प्रजापतिः।वेधाः

सांत।विधाता।ऋकारांत।विश्वसृट्।जांत विधिः।हीं२०॥ब्रह्मदेवाचीं नावें।शतानंदः।शतधृतिः।अजः।हंसरथः।हींही वर्त्तात॥

॥१७॥विष्णुर्नारायणः कृष्णो वैकुंठो विष्टरश्रवाः॥दामोदरो हृषीकेशः केशवो माधवः स्वभूः॥१८॥दैत्यारिः पुंडरीकाक्षो गोविं

दो गरुडध्वजः॥पीतांबरोऽच्युतः शार्ङ्गी विष्वक्सेनो जनार्दनः॥१९॥उपेंद्र इंद्रावरजश्चक्रपाणिश्चतुर्भुजः॥पद्मनाभो

मधुरिपुर्वासुदेवस्त्रिविक्रमः॥२०॥देवकीनंदनः शौरिः श्रीपतिः पुरुषोत्तमः॥वनमाली बलिध्वंसी कंसारातिरधोक्षजः॥२१॥

विश्वंभरः कैटभजिद्विधुः श्रीवत्सलांछनः॥पुराणपुरुषो यज्ञपुरुषो नरकांतकः॥२२॥जलशायी विश्वरूपो मुकुंदो मुरमर्दनः ॥१॥

॥टीका॥विष्णुः।नारायणः।कृष्णः।वैकुंठः।विष्टरश्रवाः।सांत।दामोदरः।हृषीकेशः।केशवः।माधवः।स्वभूः।ऊकारांत।दैत्यारिः

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

8A

पुंडरीकाक्षः। गोविंदः। गरुडध्वजः। पीतांबरः। अच्युतः। शाङ्र्। नांत। विष्वक्सेनः। विश्वक्सेनः। असाहीपाठ आहे। विष्वक्वि=
श्वक्स्रतो विज्ञैर्विषुवं विशुवं तथेति द्विरूपको शात्तालव्यं मूर्धन्योपि॥ जनार्दनः। उपेंद्रः। द्रांइंवरजः। चक्रपाणिः चतुर्भु=
जः। पद्मनाभः। मधुरिपुः। वासुदेवः। त्रिविक्रमः। देवकीनंदनः। शौरिः। श्रीपतिः। पुरुषोत्तमः। वनमाली। बलिध्वंसी
हीं२ नांत। कंसारातिः। अक्षौँधोक्षजः। विश्वंभरः। कैटभजित्। नांत द्वितीयवर्ण अल्पप्राण म्हणावा। विधुः। श्रीव=
त्सलांछनः। पुराणपुरुषः। यज्ञपुरुषः। नकौरेतकः। जलशायी। नांत। विश्वरूपः। मुकुंदः। मुरमर्दनः। ही ४५॥ विष्णूचीं
नावें॥ वसुदेवोस्यजनकः स एवानकदुंदुभिः॥२३॥ अस्य। या कृष्णाचा। जनकः। पिता। वसुदेवः। हे म्हणवितो। स=
एव। तोच वसुदेव। आनकदुंदुभिः। हे ही होय। ऐसी वसुदेवाची नावें में।२॥२३॥ श्लोक बलभद्रः प्रलंबघ्नो बलदेवो=
च्युताग्रजः॥ रेवतीरमणो रामः कामपालो हलायुधः॥२४॥ नीलांबरो रौहिणेयस्तालांको मुसली हली॥ संकर्षणः सी

(९)

॥अ०को० रपाप्रिंःणिःकालिंदीभेदनोबलः॥२५॥टीका॥बलभद्रः॥प्रलंबघ्नो॥बलदेवः॥अच्युताग्रजः॥रेवतीरमणः॥रामः॥कामपालः॥हला अ०॥कां०॥१॥
॥७॥ युधः॥नीलांबरः॥रौहिणेयः॥तालांकः॥मुसली॥हली॥ही२नांतसंकर्षणः॥सीरपाणिः॥याचें आद्याक्षरदंत्यसम्हणावें॥कालिंदीभे
दनः॥बलः॥ही१७॥बलभद्राचीनावें॥२५॥श्लोक॥मदनोमन्मथोमारःप्रद्युम्नोमीनकेतनः॥कंदर्पोदर्पकोऽनंगःकामःपंचश
रःस्मरः॥२६॥शंबरारिर्मनसिजःकुसुमेषुरनन्यजः॥पुष्पधन्वारतिपतिर्मकरध्वजआत्मभूः॥२७॥ब्रह्मसूर्विश्वके
तुःस्यादनिरुद्धउषापतिः॥टीका॥मदनः॥मन्मथः॥मारः॥प्रद्युम्नः॥मीनकेतनः॥कंदर्पः॥अनंगः॥कामः॥पंचशरः॥उन्मा
दस्तनस्तापनश्चशोषणस्तंभनस्तथा॥संमोहनश्चकामस्यपंचबाणाःप्रकीर्तिताः॥१॥अरविंदमशोकंचचूतंच
नवमल्लिका॥नीलोत्पलंचपंचैतेपंचबाणस्यसायकाः॥२॥इतिद्विविधंलक्षमपंचशरांचें॥स्मरः॥शंबरारिः॥मनसि ॥७॥
जः॥कुसुमेषुः॥अनन्यजः॥पुष्पधन्वा॥नांत॥रतिपतिः॥मकरध्वजः॥आत्मभूः॥ऊकारांत॥ही१९॥मदनाचीनावें॥

Project of the Rajawade Samshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

९A

ब्रह्मसूः। रंकांत। ऋष्यकेतुः। विश्वकेतुरितिपाठांतरं। अनिरुद्धः उषापतिः ही ४। मदनपुत्र अनिरुद्धाचीनावें। यातील प्रथम=
दोन नामें मदनाचीं दोनच अनिरुद्धाचीअसेंकेचित्॥ २७॥ श्लोक॥ लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्री र्हरिप्रिया॥ २८॥ इं
दिरा लोकमाता मा रमा मंगलदेवता॥ भार्गवी लोकजननी क्षीरसागरकन्यका॥ २९॥ टीका॥ लक्ष्मीः। पद्मालया। पद्मा।=
कमला। श्रीः। हरिप्रिया। इंदिरा। लोकमाता। मा। रमा। मंगलदेवता। भार्गवी। लोकजननी। क्षीरसागरकंन्यकाही १४। लक्ष्मी
चीं नावें। यांत हरिप्रियापर्यंतनामषट्क ग्रंथकर्त्याचीउक्ति। इंदिरादिनामाष्टक ग्रंथांतरांतील॥ २९॥ श्लोक॥ शंखो ल=
क्ष्मीपतेः पांचजन्यश्चक्रं सुदर्शनं॥ कौमोदकी गदा खड्गो नंदकः कौस्तुभो मणिः॥ ३०॥ टीका। लक्ष्मीपति विष्णूच्या।
शंकः। शंख जो तो। पांचजन्यः। हे १ म्हणवितो। चक्रं। चक्र सुदर्शनं हे १ म्हणविते। गदा। गदायुग। कौमोदकी हे १ म्हण
विते। खड्गः। तरवार। नंदकः हे १ म्हणवितें। मणिः। कंठातील मणि। कौस्तुभः। हे १ म्हणविते॥ ३०॥ श्लोक॥ गरुत्मान्गरु

(10)

क्ष्यो

।।अं॰को॰ स्तार्क्ष्यो वैनतेयः खगेश्वरः ।। नागांतको विष्णुरथः सुपर्णः पन्नगाशनः ।। ३१ ।। टीका । गरुत्मान् । नांत । गरुडः । तार्क्ष्यः । वैनतेयः ।। अं॰को॰ ३

।।९।। खगेश्वरः । नागांतकः । विष्णुरथः । सुपर्णः । पन्नगाशनः । हीं९ । गरुडाचीनावें ।। ३१ ।। शंभुरीशः पशुपतिः शिवः शूली महे=

श्वरः ।। ईश्वरः सर्व ईशानः शंकरश्चंद्रशेखरः ।। ३२ ।। भूतेशः खंडपरशुर्गिरीशो गिरिशो मृडः ।। मृत्युंजयः कृत्तिवासाः पिनाकी

प्रमथाधिपः ।। ३३ ।। उग्रः कपर्दी श्रीकंठः शितिकंठः कपालभृत् ।। ।। वामदेवो महादेवो विरूपाक्षस्त्रिलोचनः ।। ३४ ।।

कृशानुरेताः सर्वज्ञो धूर्जटिर्नीललोहितः ।। हरः स्मरहरो भर्गस्त्र्यंबकस्त्रिपुरांतकः ।। ३५ ।। गंगाधरोंधकरिपुः क्रतुध्वं

सी वृषध्वजः ।। व्योमकेशो भवो भीमः स्थाणू रुद्र उमापतिः ।। ३६ ।। अहिर्बुध्न्योष्टमूर्तिश्च गजारिश्च महानटः ।। टीका ।।

शंभुः । ईशः । पशुपतिः । शिवः । शूली । नांत । महेश्वरः । ईश्वरः । शर्वः । ईशानः । शंकरः । चंद्रशेखरः । भूतेशः । खंडपरशुः ।।९।।

गिरीशः । गिरिशः । मृडः । मृत्युंजयः । कृत्तिवासाः । सांत । पिनाकी । नांत । प्रमथाधिपः । उग्रः । कपर्दी । नांत । श्री=

10A

कंठः।शितिकंठः।कपालभृत्।तांत।वामदेवः।महादेवः।विरूपाक्षः।त्रिलोचनः।कृशानुरेताः।सांत।सर्वज्ञः।धूर्जटिः।नीः
ललोहितः।हरः।स्मरहरः।भर्गः।त्र्यंबकः।त्रिपुरांतकः।गंगाधरः।अंधकरिपुः।क्रतुध्वंसी।नांतवृषध्वजः।व्योमकेशः।
भवः।भीमः।स्थाणुः।रुद्रः।उमापतिः।अहिर्बुध्न्यः।अष्टमूर्तिः।गजारिः।महानटः।हीं ५२।।इश्वराचीनावें।गोपालकः।
उः।मः।हीं ३।वर्त्ततांहेत।कपर्दोस्य जटाजूटः पिनाकोजगवं धनुः।।३७।।प्रमथास्युःपारिषदाः ब्राह्मीत्याद्यास्तुमा
तरः।।अस्य।।याइश्वराचा।जटाजूटः।जटाबंध जो तो।कपर्दः।हे १ म्हणवितो।धनुः।धनुष्य।पिनाकः।अजगवं।हीं २
म्हणविते।पारिषदाः।पारिषदगण जेते।प्रमथाः।हे १ म्हणविता त।अकारांत बहुवचन।ब्रह्मी आदिमातरः।मातृगण।
ब्राह्मीमाहेश्वरीचैवकौमारीवैष्णवीतथा।।वाराहीचतथेंद्राणीचामुंडाः सप्तमातरइतिग्रंथांतर।।ब्राह्म्यादिसप्तश
क्ति देवतांचीप्रत्येकएकेकीचेंएकेकनाव।तकसेतर।ब्राह्मी।हे ब्रह्मदेवासारिखेंसायुधसवाहनात्मक स्त्रीस्वरूपया

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai.

(11)

।।अ॰को॰ प्रकारें। माहेश्वरीःयादि। ब्राह्मणी असाही पाठ। कौमारीयथें कौबेरी असा पाठ। एकुन सप्तसंख्याच मातरा।। विभूतिर्भू कां॰१।।
।।१।। तिरैश्वर्यमणिमादिकमष्टधा।। ३८।। टीका।। विभूतिः। भूतिः। ऐश्वर्यं। प्रथम दोन स्त्रीलिंग। अंत्य नपुंसक। ही ३ ही अणिमादिक
अष्टप्रकारें। ऐश्वर्याची नावें। ती कोणती। तीं ग्रंथांतरांतील सांगिजेतात।। अणिमा महिमा चैव गरिमा लघिमा तथा।। प्राप्तिः
प्राकाम्यमीशित्वं वशित्वं चाष्टभूतयः।। ३९।। टीका।। अणिमा। हे अति सूक्ष्म स्वरूप धरावयाच्या सिद्धीचें नाम।। महिमा। हे
अति स्थूल स्वरूप धरावयाच्या सिध्दिचे नाव। गरिमा। हे अतिभार स्वरूप धरावयाच्या सिध्धीचें नाव। लघिमा हे ३ अतिहल
कारपण धरावयाच्या सिध्धीचें नाव। ही ४ नांत पुल्लिंगें। प्राप्तिः। हे १ स्त्रीलिंग। सर्व प्राप्ति होण्या सिध्धीचें नाव। प्राकाम्यं
। हें ३ नपुंसक। इछित सिद्धी सिध्दि होण्या सिध्धीचें नाव। इशित्वं। हे नपुंसक। इश्वरत्व सामर्थ्य सिध्दिचें नाव। वशित्वं। हे १ ।।१।।
सर्व वशवर्तित्व होण्या सिध्धीचे नाव।। श्लोक।। उमा कात्यायनी गौरी काली हैमवतीश्वरी।। शिवा भवानी रुद्राणी श

"Joint project of the Rajwade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai."

11A

र्वाणीसर्वमंगला।।३९।।अपर्णापार्वतीदुर्गामृडानीचंडिकांबिका।।आर्यादाक्षायणीचैवगिरिजामेनकात्मजा।।४०।।टीका।।उमा।
कात्यायनी।गौरी।काली।हैमवती।ईश्वरी।ईश्वरा।असाहीपाठआहे।ईश्वरः।शंकरेधीशेतस्यपत्न्यामीश्वरीश्वरा।इतिवो
पालितःकोशः।शिवा।भवानी।रुद्राणी।शर्वमंमत्ल्काणी।सर्वमंगला।अपर्णा।पार्वती।दुर्गा।मृडानी।चंडिका।अंबिका।=
आर्या।दाक्षायणी।गिरिजा।मेनकात्मजा।ही२३।पार्वतीचीनावें।।४०।।विनायकोविघ्नराजद्वैमातुरगणाधिपाः।।अप्येकदं
तहेरंबलंबोदरगजाननाः।।४१।।टीका।विनायकः।विघ्नराजः।द्वैमातुरः।गणाधिपः।विघ्नराजशद्वापासून।गणाधिपप
र्यंत।समस्तपदास्तव।बहुवचकेलें।एकदंतः।हेरंबः।लंबोदरः।गजाननः।हीं८गणपतीचीनावें।श्लोक।।४१।।कार्ति
केयोमहासेनःशरजन्माषडाननः।पार्वतीनंदनःस्कंदःसेनानीरग्निभूगुहः।।बाहुलेयस्तारकजिद्विशाखःशिखिवाह
नः।।षाण्मातुरःशक्तिधरःकुमारःक्रौंचदारणः।।४२।।टीका।।कार्तिकेयः।महासेनः।शरजन्मा।नांतं।षडाननः।पार्वती
नंदनः।स्कंदः।सेनानीः।हेदीर्घईकारांत।अग्निभूः।हेंदीर्घईकौंडेरांत।गुहः।बाहुलेयः।तारकजित्।तांत।विशाखः।

Joint project of the Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Yashwantrao Chavan Pratishthan, Mumbai

मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com